पूर्ण प्रतियोगिता

Dr. Amitendra Singh

Economics Department

Pt.DDUGovt. Girls PG College ,RJPM Lucknow

E mail-amitendra82@gmail.com.in

पूर्ण प्रतियोगिता

- प्रतियोगिता बाजार का अर्थ एवं वर्गीकरण
- प्रतियोगिता बाजार का सन्तुलन विश्लेषण
  - कुल आगम और कुल लागत वक्रों द्वारा
  - सीमान्त आगम और सीमान्त लागत वक्रों द्वारा
- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की विशेषताएं
- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में फर्म का सन्तुलन
- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में उद्योग का सन्तुलन

प्रतियोगिता बाजार का अर्थ एवं वर्गीकरण

- **1. पूर्ण प्रतियोगिता**:- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार वह है जहाँ स्वतन्त्र रूप से कार्य करने वाले छोटे क्रेताओं तथा विक्रेताओं की अधिक संख्या होती है जो समरूप वस्तु का उत्पादन करते हो। वहाँ वस्तु का ही नहीं विक्रेताओ का भी प्रमापीकरण होता हों। सभी को बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है। कोई गैर कीमत प्रतियोगिता नहीं होता। उत्पादन के साधन पूर्ण गतिशील होते है फलस्वरूप एक कीमत (माँग की मूल्य लोच अनेक) पाई जाती है, और एक व्यक्तिगत विक्रेता या उत्पादक या फर्म के लिए उसकी वस्तु की माँग पूर्णतया लोचदार होती है।
- **2. एकाधिकार**:- एकाधिकार वह है जिसका वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियन्त्रण हो, प्रतियोगिता शून्य होती है। एक फर्म उद्योग पाया जाता है, वस्तु के कोई निकट या अच्छे स्थानापन्न नही होते या वस्तु की माँग की आड़ी लोच शून्य होती है। साथ ही नए उत्पादको के प्रवेश के प्रति प्रभावपूर्ण रूकावट होती है।
- **3. अपूर्ण प्रतियोगिता:-** अपूर्ण प्रतियोगिता का आशय पूर्ण प्रतियोगिता या एकाधिकार की किसी भी दशा का अभाव होना है। इस प्रकार अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत अनेक उपश्रेणियाँ होती है प्रथम महत्वपूर्ण उपश्रेणी एकाधिकारिक प्रतियोगिता है जिस पर प्रो0 ई0 एच0 चैम्बरलिन ने अधिक बल दिया है। एकाधिकार प्रतियोगिता वह जिसमें बड़ी संख्या में फर्में विभेदीकृत पदार्थो का उत्पादन करती है जो एक दूसरे के निकट के स्थानापन्न होते है। इनके परिणामस्वरूप एक फर्म का माँग वक्र अधिक लोचदार होता है। जो यह संकेत करता है कि इसमें फर्म कीमत पर कुछ नियन्त्रण रखती है। अपूर्ण प्रतियोगिता की दूसरी श्रेणी जिसे श्रीमती जोन राबिन्सन ने अल्पाधिकार कहा है इसकी प्रथम उपश्रेणी पदार्थ विभेदीकरण बिना अल्पाधिकार है जिसे शुद्ध अल्पाधिकार कहते है इसमें समरूप पदार्थ का उत्पादन करने वाली कुछ फर्मो के बीच प्रतियोगिता होती है। फर्मों की कमी सुनिश्चित करती है कि उनमें से प्रत्येक का पदार्थ कीमत पर कुछ नियन्त्रण होगा तथा प्रत्येक फर्म का माँग वक्र नीचे की ओर गिरता हुआ होता है जो यह इँगित करता है कि प्रत्येक फर्म कीमत पर कुछ नियन्त्रण रखती है।

प्रतियोगिता बाजार का अर्थ एवं वर्गीकरण

विशेषताएँ	पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार	अपूर्ण प्रतियोगिता एकाधिकार अल्पाधिकार	
फर्मों की संख्या	बहुत अधिक	एक	अधिक संख्या	कुछ अधिक परन्तु दो से कम नही
वस्तु कास्वभाव	प्रमापित या समरूप	निकट के स्थानापन्न	विभेदीकृत	प्रमापित या विभेदित
फर्म के लिए माँग की कीमत लोच	अनन्त	बहुत कम	अधिक	कम
जानकारी की पूर्ण प्राप्यता	हाँ	नहीं	न्हीं	नहीं
कीमत पर नियन्त्रण कीमात्रा	कुछ नहीं	पर्याप्त या पूर्ण	कुछ	कुछ
गैर कीमत प्रतियोगिता	कोई नहीं	मात्रा जनता से अच्छे सम्बन्ध	विज्ञापन, टेडमार्क, ब्राण्ड	भेदित अल्पाधिकार में पर्याप्त

प्रतियोगिता बाजार का सन्तुलन विश्लेषण

- कुल आगम और कुल लागत वक्रों द्वारा

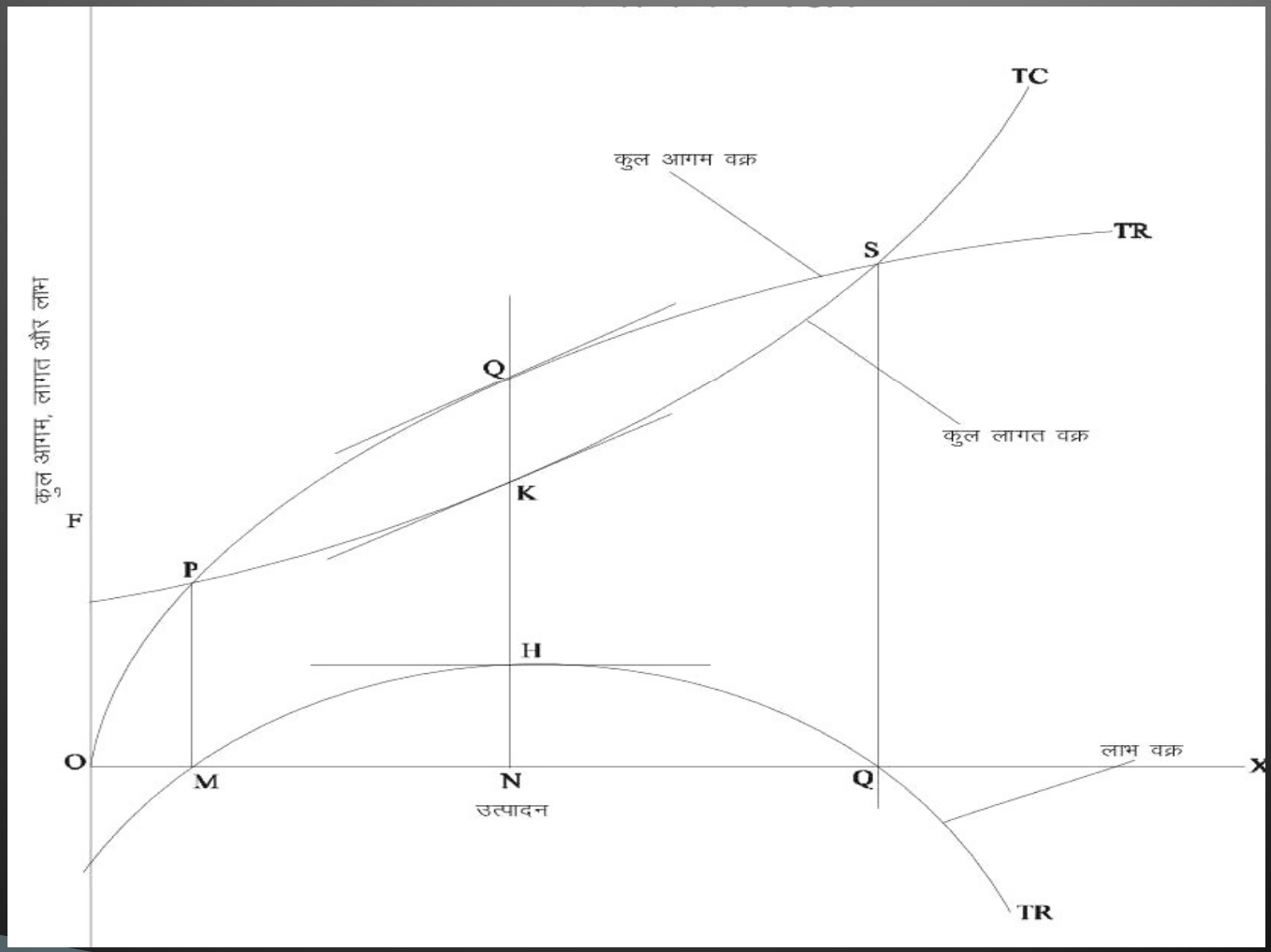

सीमान्त आगम और सीमान्त लागत वक्रों द्वारा

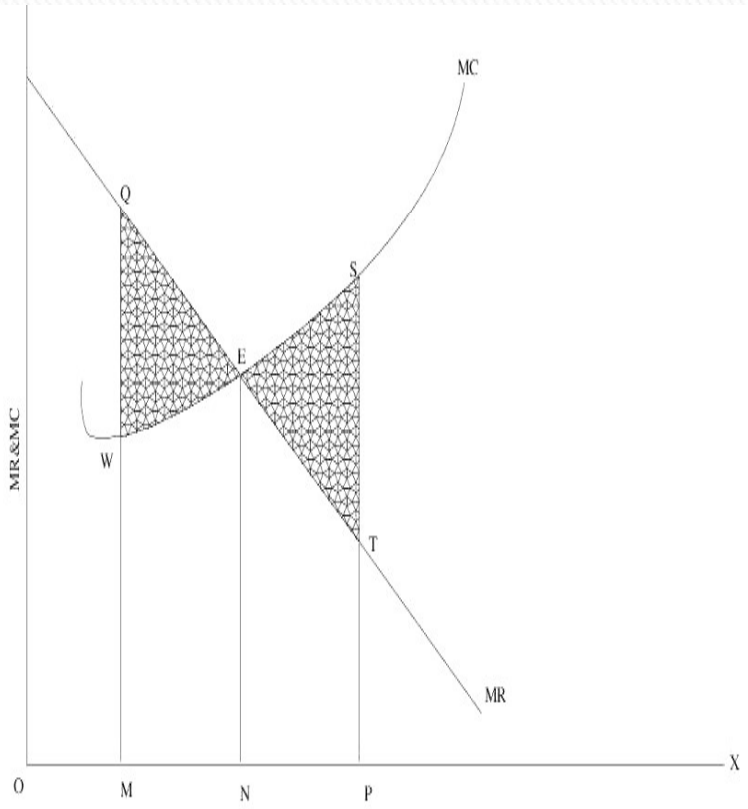

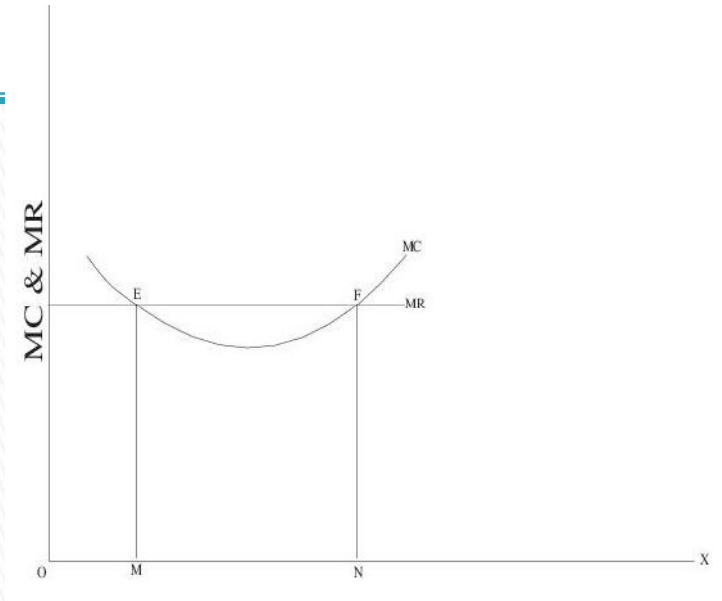

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की विशेषताएं

- समरूप वस्तु का उत्पादन ।
- प्रचालित कीमत की पूर्ण जानकारी ।
- फर्मो का स्वतन्त्र रूप से उद्योग में प्रवेश करना तथा उसको छोड़ना।
- क्रेताओं एवं विक्रेताओं को पूर्ण जानकारी होती है।
- उत्पादन साधनों की पूर्ण गतिशीलता।
- परिवहन लागतें नहीं होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में फर्म का सन्तुलन
अल्पकाल में फर्म का साम्य

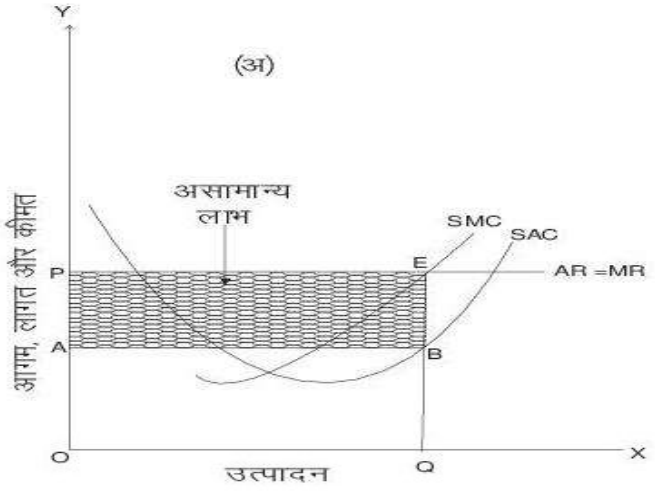

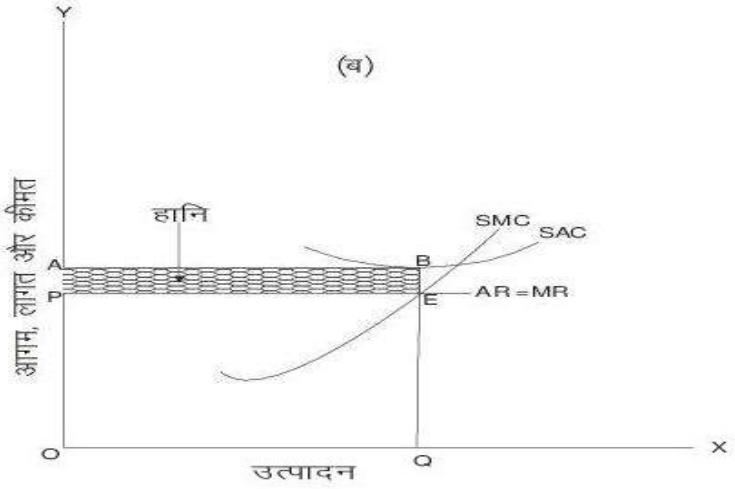

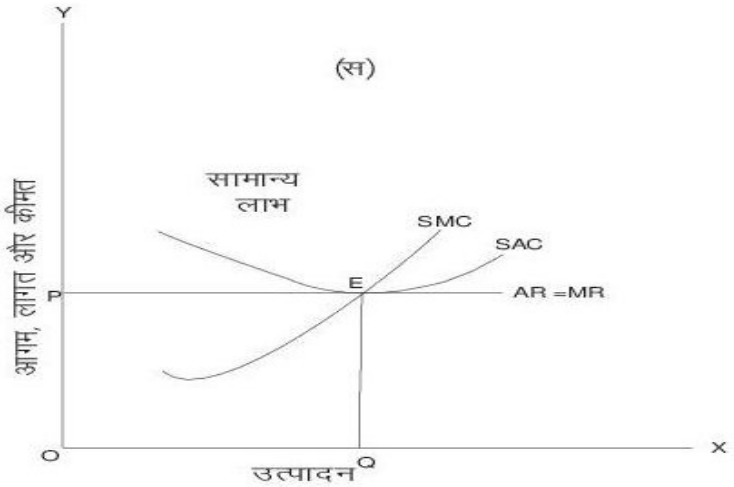

फर्म का दीर्घकालीन सन्तुलन

- कि पूर्ण प्रतियोगिता के दीर्घकालीन संतुलन प्राप्त होने के लिए निम्न दो शर्ते अवश्य पूरी होनी चाहिए।
- (1) कीमत (P=AR) = सीमान्त लागत (MC)
- (2) कीमत (P=AR) = औसत लागत (AC)

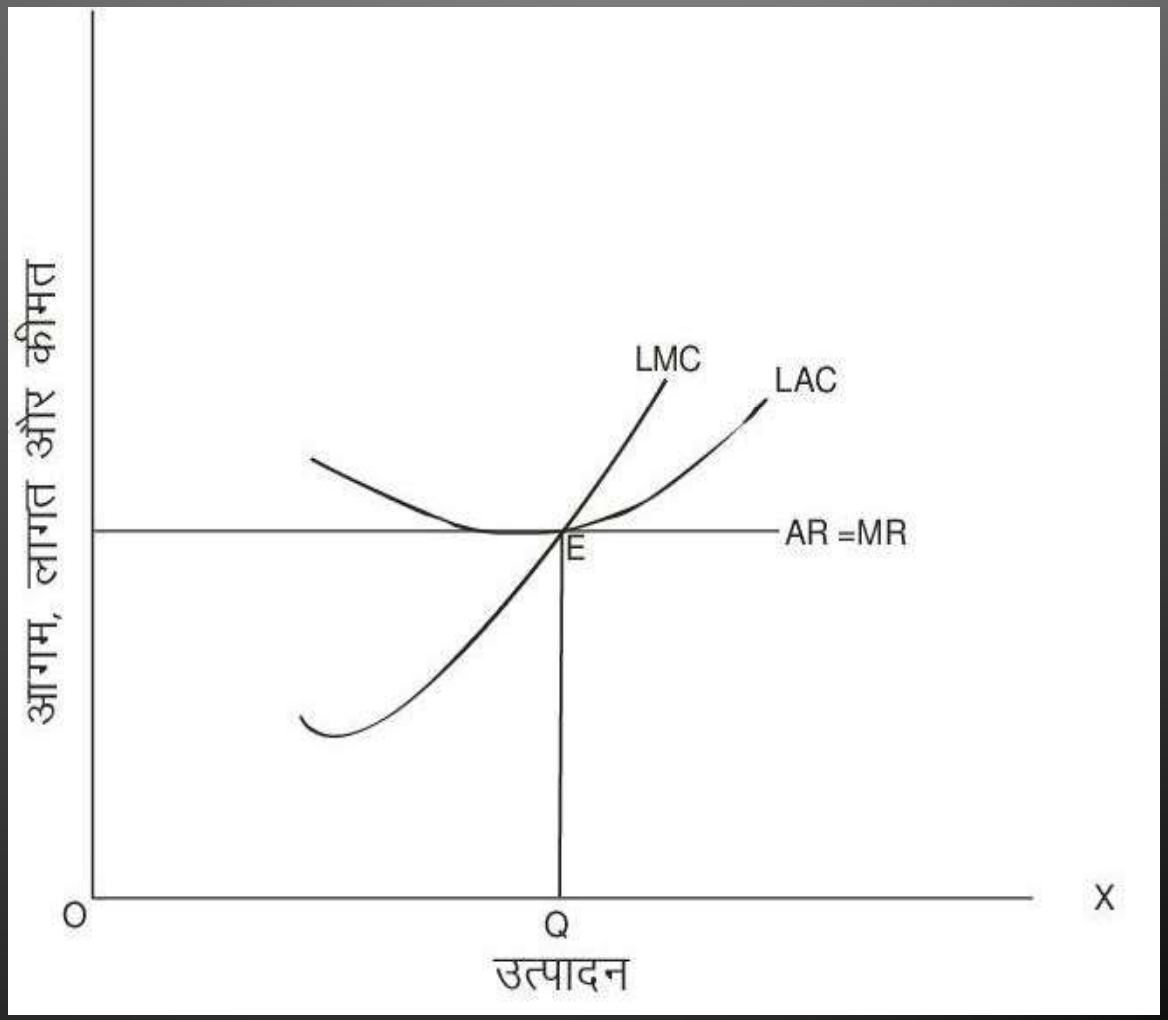

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में उद्योग का सन्तुलन

- उद्योग के सन्तुलन के लिए निम्न शर्तें पूरी होनी चाहिए।
- 1. उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु की पूर्ति की गई मात्रा तथा इसके लिए माँग की मात्रा समान हो।
- 2. माँग और पूर्ति द्वारा निर्धारित कीमत पर सभी फर्में व्यक्तिगत सन्तुलन में हो और उनकी सीमान्त लागत, सीमान्य आगम के बराबर हो।
- 3. नई फर्मों के उद्योग में प्रवेश करने तथा वर्तमान फर्मों की उद्योग से बाहर जाने की प्रवृति न पाई जाती है और वर्तमान फर्में केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त कर रही हों।
- उद्योग के अल्पकाल

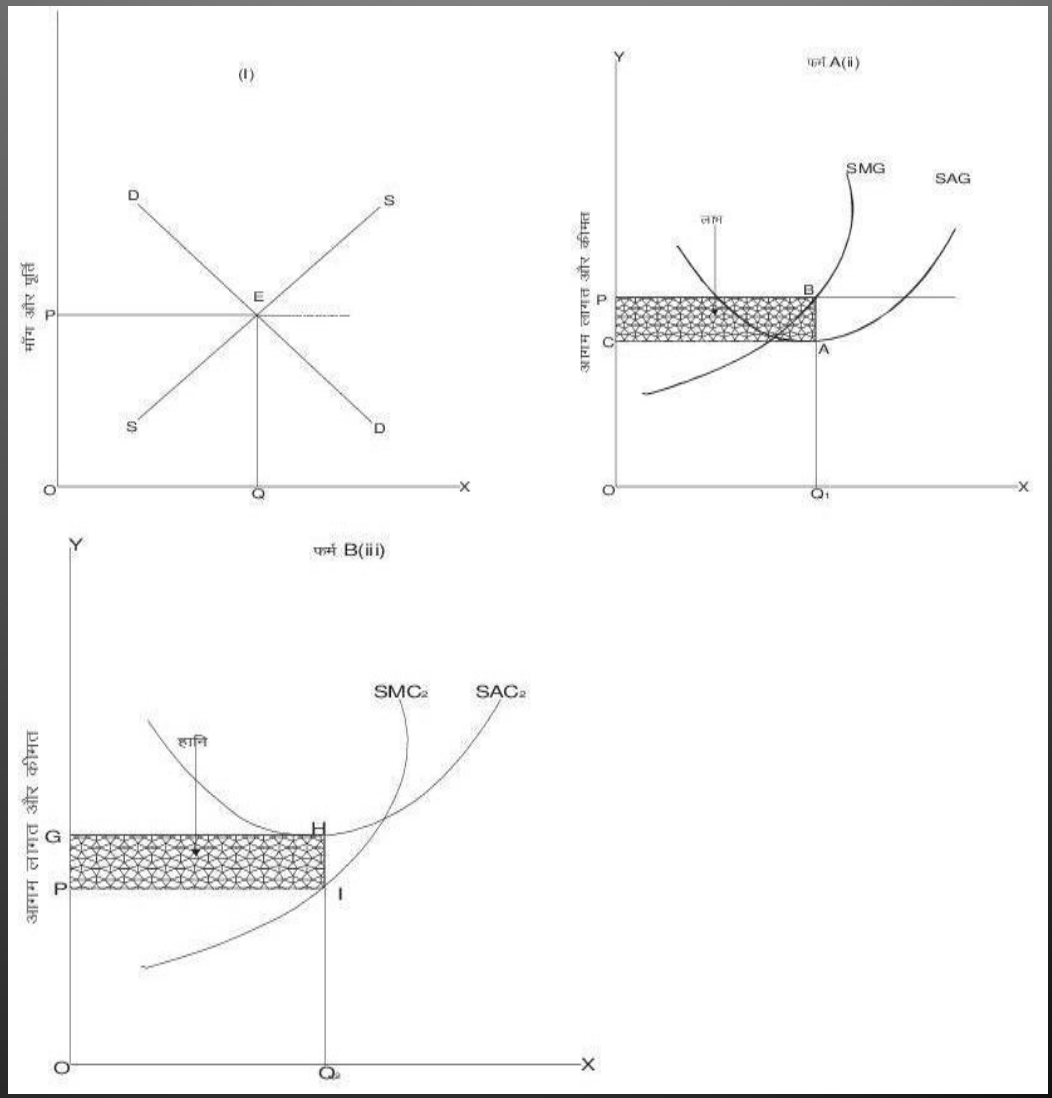

उद्योग का दीर्घकालीन सन्तुलन